माणिक्य लाल वर्मा

माणिक्य लाल वर्मा (4 दिसंबर 1897 को एक माथुर कायस्थ परिवार में जन्मे) 1949 में भारत की संविधान सभा के सदस्य थे। राज्य के पूर्ण गठन से पहले वह भारत के राजस्थान के प्रधान मंत्री थे। वह 1957 में चित्तौड़गढ़ से और 1952 में टोंक से लोकसभा के लिए चुने गए । उन्हें 1965 में पद्म भूषण प्राप्त हुआ था । [1]

उन्होंने 1919 और 1923 के बीच भीलवाड़ा में उठे किसान आंदोलन बिजोलिया आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । स्वतंत्रता सेनानी होने के नाते वे कई वर्षों तक जेल में रहे। वर्मा एक अथक सामाजिक कार्यकर्ता थे। उन्होंने दक्षिणी राजस्थान में जनजातियों , अन्य पिछड़े वर्गों और महिलाओं के बीच शिक्षा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अधिसूचित जातियों की सामाजिक स्थितियों को बढ़ावा देने के लिए विमुक्त जनजाति संघ की स्थापना की। इस संगठन ने राजस्थान में अधिसूचित जाति के छात्रों के लिए कई छात्रावास स्थापित किए। उनकी पहल पर पश्चिमी सीमावर्ती जिले के सीमांत (सीमांत) छत्रवास की स्थापना की गई।

14 जनवरी 1969 को उनकी मृत्यु हो गई। उनकी पत्नी श्रीमती। नारायणी देवी राज्यसभा सदस्य थीं और पुत्र दीन बंधु वर्मा उदयपुर निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा सदस्य थे। उनके दामाद शिवचरण माथुर भी दो बार राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे।

माणिक्य लाल वर्मा टेक्सटाइल एंड इंजीनियरिंग कॉलेज का नाम उनके नाम पर रखा गया था। उदयपुर की पिछोला झील के किनारे एक विशाल उद्यान का नाम भी उन्हीं के नाम पर रखा गया है।

सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ता; सचिव, विद्या प्रचारिणी सभा, बिजौलिया (1916); 1918 में करों और बेगार के विरुद्ध किसान सत्याग्रह का आयोजन किया ; 1919 में, 1923 में भी, 1927 में तीन बार और फिर 1931 में भी कैद किये गये; 1932-33 में कुंभलगढ़ में नजरबंद किया गया और 1938 में 'प्रजा मंडल' की स्थापना और राज्य के खिलाफ सत्याग्रह करने के लिए उदयपुर राज्य से निष्कासित कर दिया गया और एक वर्ष, 1939 में फिर से जेल में डाल दिया गया ; 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भाग लिया; रिसेप्शन कमेटी के अध्यक्ष, ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कॉन्फ्रेंस, 1945; राजस्थान के मुख्यमंत्री, 1948-49; अध्यक्ष, राजस्थान राज्य कांग्रेस कमेटी , 1951; सदस्य, अखिल भारतीय कांग्रेस कार्य समिति , 1952-54; अध्यक्ष, राजस्थान भील सेवा मंडल विमुक्त जाति सेवक संघ , 1954-55; संयोजक, अखिल भारतीय गाड़िया लुहार सम्मेलन एवं भारत सेवक समाज , 1955-56; अध्यक्ष, गाड़िया लोहार सेवक संघ , 1956-62, राजस्थान आदिम जाति सेवक संघ, 1957-62; राजस्थान वन श्रमिक सहकारी संघ, 1959-62; सदस्य, संविधान सभा, 1947-50; अनंतिम संसद, 1950-52; पहली लोकसभा, 1952-57 और दूसरी लोकसभा, 1957-62।

सामाजिक गतिविधियाँ: 1934 में अजमेर मेरवाड़ा के नारेली में हरिजन आश्रम का आयोजन ; अगस्त, 1934 में डूंगरपुर राज्य के ग्राम खड़लाई में राजस्थान के भीलों और मीनाओं के बीच रचनात्मक कार्य किया; अकाल पीड़ित सेवा संघ , मेवाड़ की स्थापना , 1940; उदयपुर में हरिजन सेवक संघ एवं भील सेवा संघ की स्थापना की ; महिला आश्रम, भीलवाड़ा की स्थापना , 1944; राजस्थान कालबेलिया सेवा संघ की स्थापना की।